निरतिवाद

अर्थात्

समाजवाद की आत्मा का भारतीय अवतार

'अति' इधर कहीं अति उधर कहीं, 'अति' ने अन्धेर मचाया है।
कोई कण कण को तरस रहा, अति-उदर किसी ने खाया है।
या तो नचती उच्छृखलता, अथवा मुर्दापन छाया है।
'अति' का यह अति अन्धेर देख, प्रभु निरतिवाद बन आया है ॥

प्रणेता –
श्री दरबारीलाल सत्यभक्त
संस्थापक—सत्यसमाज
कुलपति-सत्याश्रम वर्धा [सी पी]

अगस्त १९३८ ई.

मूल्य छह आने